क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति

संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

क्रम संख्या.....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

12 Qjojh] 2013 महाकुंभ क्षेत्र में efDr ekx| पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

क्रियायोग के द्वारा आदतों पर विजय

12 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । ''क्रियायोग की साधना से आदतों पर पूर्ण विजय प्राप्त हो जाती है जिससे साधक के अंदर की देवत्व शक्ति का जागरण होने लगता है । सम्पूर्ण समस्याओं का मूल कारण है आदतों की गुलामी । जब मनुष्य आदतों के अधीन होकर किसी भी कार्य को करता है उसके अंदर शक्ति, ज्ञान, धैर्य, साहस का लोप होने लगता है । सूक्ष्मता से देखने पर स्पष्ट होगा कि श्वाँस का लेना, खाना, पीना, सोना, जगना आदि सब कुछ आदत है। आदत पर पूर्ण विजय प्राप्त होने पर कर्मबंधन समाप्त हो जाता है । ऐसी अवस्था में साधक का जीवन अतीत के कर्मों से नहीं बल्कि सीधा परमात्म शक्ति से नियंत्रित होता है । आदत पर पूर्ण विजय प्राप्त होना अन्तःकरण में देवत्व शक्ति का जागरण है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में आयोजित क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यक्रम में व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि समस्त बीमारियों का मूल कारण आदतों की गुलामी है । मनुष्य अनेक प्रकार की आदतों से ग्रसित है । एक निश्चित प्रकार के स्वाद, गंध को लेने की आदत, एक निश्चित रूप में देखने, बोलने, सोचने आदि से संबंधित आदतें मनुष्य को सीमित दायरे में कर देती हैं। गहनता से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य सम्पूर्ण क्रियाकलापों को आदतों के अधीन होकर संपादित करता है जिससे वह अपने सर्वव्यापी, अनन्त व

अमर स्वरूप की अनुभूति नहीं कर पाता है । परिणामस्वरुप वह अनेक प्रकार की बीमारियों, तनाव, चिन्ता, डर व अज्ञानता से ग्रसित होने लगता है । आदतों की गुलामी से मुक्त होने पर समस्त दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का समापन हो जाता है और साधक अपने मौलिक अनन्त व विराट स्वरूप का साक्षात्कार कर लेता है । ऐसी अवस्था में उसे जिस परम ज्ञान, शांति व शाश्वत् आनन्द की प्राप्ति होती है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने महाभारत के विभिन्न पात्रों के आध्यात्मिक स्वरुप पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि महाभारत काल के द्रोणाचार्य अपने अंदर की आदत के समरूप हैं । जिस प्रकार द्रोणाचार्य कौरव व पाण्डव को शिक्षा दिये थे उसी प्रकार आदतें सुकर्म और दुष्कर्म दोनों को शक्ति देती हैं । किसी भी अच्छे व बुरे कर्म को करने के लिए आदत का सहारा लेना पड़ता है । द्रोणाचार्य पर विजय प्राप्त करने के लिए धृष्टद्युम्न की आवश्यकता पड़ी थी । क्रियायोग की साधना से अन्तःकरण में धृष्टद्युम्न शक्ति का जागरण होता है जिससे मानव स्वरुप में देवत्व प्रकाशित होने लगता है । जिस प्रकार धृष्टद्युम्न की व्यूह रचना में पाण्डव सुरक्षित थे उसी प्रकार अन्तःकरण में धृष्टद्युम्न शक्ति प्रकाशित होने पर सम्पूर्ण दैव शक्तियाँ पूर्ण सुरक्षित होने लगती हैं ।

धृष्टद्युम्न शक्ति के आध्यात्मिक स्वरुप को स्पष्ट करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि धृष्टद्युम्न अन्तःकरण की योगाग्नि के प्रतीक हैं । ''धृष्टद्युम्न'' शब्द में 'धृष्ट' का अभिप्राय घर्षण तथा 'द्युम्न' का अभिप्राय बल है । क्रियायोग के अभ्यास में शरीर में मन को केन्द्रित किया जाता है जिससे शरीर व मन के बीच घर्षण होता है और इस घर्षण से मनुष्य के दिव्य योगाग्नि प्रकट होती है जिससे मनुष्य आदतों की गुलामी से मुक्त होकर अपने परम ज्ञानमय, पूर्ण, अमर व सर्वव्यापी स्वरूप का अनुभव कर सम्पूर्ण कष्टों से मुक्त हो जाता है ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता